[स]न्मति साहित्य रत्नमाला, रत्न ४

जैन कन्या शिक्षा

तीसरा भाग

[तीसरी कक्षा के लिए]

सम्पादक—
कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी
महाराज

सन्मति ज्ञान पीठ
आगरा
१९५१

प्रकाशक—
सन्मति ज्ञान पीठ
आगरा

द्वितीय संस्करण २१००	मूल्य छः आना	सन् १९५१

मुद्रक—
अमर भारत (इलेक्ट्रिक) प्रिंटिंग प्रेस,
परमारो बाजार आगरा।

शिक्षा मानव जीवन की उन्नति का सबसे बड़ा साधन है। किसी भी देश, जाति और धर्म का अभ्युदय, उसकी अपनी ऊँची शिक्षा पर ही है। हर्ष है कि जैन समाज भी अब इस ओर लक्ष्य देने लगा है और हर जगह शिक्षण संस्थाओं का आयोजन हो रहा है।

लड़कों की शिक्षा के साथ साथ लड़कियों की शिक्षा की ओर भी समाज ने ध्यान दिया है। और इस क्षेत्र में भी काफी संख्या में कन्या पाठशालाएं चलाई जा रही हैं। परन्तु लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक-शिक्षा का जैसा चाहिए वैसा प्रबंध नहीं हो पाया है। जहाँ कहीं प्रबंध किया भी गया है, वहाँ धार्मिक शिक्षा का अभ्यासक्रम अच्छा न होने से वह पनप नहीं पाया है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि यह कार्य किसी अच्छे विद्वान के हाथों सम्पन्न हो। हमें लिखते हुए हर्ष होता है कि उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के द्वारा यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। कन्याओं की मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर ही उनकी योग्यतानुसार यह जैन कन्या शिक्षा का पाठ्यक्रम आपके सामने है। आप देखेंगे कि किस सुन्दर पद्धति से धार्मिक, सैद्धान्तिक, नैतिक और ऐतिहासिक विषयों का उचित संकलन किया गया है। आशा है यह पाठ्यक्रम कन्याओं के लिए धार्मिक शिक्षा की पूर्ति करेगा।

—रतनलाल जैन मित्तल
मन्त्री, सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामण्डी, आगरा।



जय सन्मति, जय जिन वीर हितङ्कर,

जय करुणा सागर, जय अभयङ्कर !

विनय

१

सच बोलें सब बात विचारें,
कर श्रम कर जन्म सँवारें।
रक्खें देश जाति का मान,
ऐसी मति होव भगवान।

२

छोड़ें झगड़ों को बिसरावें,
आगे के हित नेह बढ़ावें।
एका करें बढ़े सन्मान,
ऐसी मति होव भगवान

३

भारत वासी सब मिल जावें,
गिरे हुआ को तुरत उठावें।
भूले कभी न अपनी आन,
ऐसी मति होवे भगवान।

४

मन से वैर विरोध निकालें,
सब जन-हितकर रीति निकालें।
सत्य का हो हरदम ध्यान,
ऐसी मति होवे भगवान।

५

जैन धर्म की जय नित गावें,
सदाचार पर बलि बलि जावें।
भारत मा की हम सन्तान,
ऐसी मति होवे भगवान।

जीव और अजीव

'सरला, तुम्हारी माता जैन धर्म का पालन करती हैं न !'

'जी हां ! माता जी का जैन धर्म पर दृढ़ विश्वास है, और वे हमेशा जैनधर्म का पालन करती हैं ।'

'जब कभी तुम माता जी के पास बैठती हो और वे तुम्हें हित की बात बताती हैं, तब जैन धर्म की किस शिक्षा पर अधिक जोर देती हैं ?'

'माता जी बहुत अधिक दयालु हैं । मैं जब भी उन के पास बैठती हूँ तो हमेशा मुझे यही शिक्षा देती हैं कि मुन्नी, किसी भी जीव को मत सताना ! सभी जीवों को हमारे समान ही दुःख सुख होता है । जब हमें दुःख पसन्द नहीं तो दूसरे जीवों को दुःख कैसे पसन्द आयगा ?'

'तुम्हारी माता जी तो बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव की हैं । तुम्हारा बहुत ही बड़ा अच्छा भाग्य था,

जो तुम्हें ऐसी दयालु और नेक माता मिली। पर हां, यह तो बताओ कि जीव किसे कहते हैं? जब तक तुम जीव को अच्छी तरह न समझोगी, तब तक उसकी दया भी कैसे पालोगी?'

'जीव किसे कहते हैं?' यह तो मुझे पता नहीं, आप ही बताएं?'

'बेटी, तुम बड़ी सयानी हो। आज तुम्हें जीव किसे कहते हैं? और जीव से विपरीत अजीव किसे कहते हैं? यह अच्छी तरह समझाऊँगी। परन्तु पहले जरा अपनी दावात, और कलम को तो आवाज दो कि वे यहां आएँ, कुछ थोड़ा सा लिखना है।'

'आप क्या बात कहती हैं? दावात और कलम के कान थोड़े ही हैं, जो मेरी आवाज सुन लें और चली आएँ। बिना पैरों के आ भी कैसे सकती हैं?'

'अच्छा, दावात और कलम बिना कान के हैं, इस लिए सुन नहीं सकतीं। और बिना पैर के हैं, इस लिए चल भी नहीं सकतीं। इसी तरह आंख के बिना देख

नहीं सकती, और नाक के बिना सूँघ भी नहीं सकती न ?'

'जी हाँ, देख भी नहीं सकती और सूँघ भी नहीं सकती। दावात और कलम के आँख तथा नाक कहाँ हैं ?

'बेटी, तुम बड़ी चतुर लड़की हो। कितनी अच्छी दलीलें करती हो। अच्छा तुम्हारी दावात और कलम बिना कान के आवाज नहीं सुन सकतीं, बिना आँख के देख भी नहीं सकतीं, बिना नाक के सूँघ नहीं सकतीं, और बिना पैर के चल फिर भी नहीं सकतीं, तो रहने दीजिए। परन्तु देखो, वह सामने आले में रबड़ का बना हुआ लंगूर खड़ा है, उसे ही आवाज दो, वह दावात और कलम दे जायगा ?'

'आज आप भी कैसी बातें कर रही हैं। वह तो खिलौना है, भला कैसे सुन सकता है, और आ सकता है ?'

'बेटी सरला, अब तुम मुझे धोखा नहीं दे सकती। खिलौना हुआ तो क्या है ? जब इस के कान मौजूद हैं, तब सुन क्या नहीं सकता ? क्या बहरा हो गया है जब पैर मौजूद हैं तो, तब चल फिर क्यों नहीं सकता ? क्या पैरों में दर्द है ?'

'रानी, कान हैं तो क्या हुआ ? बनावटी कानों से सुना थोड़े ही जाता है ? पैर भी बनावटी हैं इस लिए इन से चला फिरा भी नहीं जा सकता । रहे मन की और दर्द की बात नहीं है ।'

'बेटी, यह लो फली । ललुआ को खिला दो, उसे भूख लग रही होगी ! बिचारा कब से चुप चाप खड़ा है ?,

'यह खा भी नहीं सकता ।'
'मुँह तो है फिर खा क्यों नहीं सकता ?'

'यह मुँह असली मुँह थोड़े ही है ? बनावटी है। बनावटी मुँह से न खाया जाता है न बोला जाता है ।'

'तुम्हारे कहने के अनुसार तो फिर यह सूँघ भी नहीं सकता ! नाक भी तो बनावटी ही है ?'

'जी हाँ ! नाक बनावटी है, इस लिए यह फल वगैरह सूँघ भी नहीं सकता ।'

'मेरी प्यारी बिटिया, तुम तो अब बहुत हुँसियार होगई हो । कितनी सुन्दर बातें कर रही हो । तुम्हारी बात

मैंने मान ली। बनावटी कान से सुना नहीं जा सकता। बनावटी आँख से देखा नहीं जा सकता। बनावटी नाक से सूँघा नहीं जा सकता। बनावटी मुँह से खाया नहीं जा सकता। क्यों ठीक है न?'

'जी हाँ बिल्कुल ठीक है।'

'अच्छा यह बताओ—तुमने कभी कोई मरा हुआ बिल्ली का बच्चा, या मरा हुआ कुत्ते का पिल्ला, देखा है।'

'हाँ, देखा है।'

'वह तो सुन सकता होगा, देख सकता होगा? चल फिर सकता होगा, और खा पी सकता होगा?'

'भला कहीं मुर्दा भी ऐसा कर सकता है? मुर्दा न सुन सकता है, न देख सकता है, न चल फिर सकता है, और न खा पी सकता है।'

'क्यों नहीं कर सकता? उसके तो आँख, कान, मुँह आदि असली हैं, बनावटी नहीं हैं।'

'आँख, कान आदि असली हैं, बनावटी नहीं हैं, आपकी यह बात ठीक है। परन्तु जो मुर्दा हो जाता है, उसमें जान नहीं रहती, इस लिए वह आँख कान आदि के होते हुए भी उन से काम नहीं ले सकता। बेजान चीज़, जानदारों की तरह, काम नहीं कर सकती।'

'सरला, अब की बार तूने पते की बात कही है। बेजान चीज़ जानदारों की तरह हरकत नहीं कर सकती, यह बात बिल्कुल सही है। बेटी, तब तो रबड़ का ललुआ भी, बेजान होने से ही देखना सुनना आदि नहीं कर सकता, बनावटी और असली आँख कान आदि का तो अब कोई प्रश्न नहीं रहा। और यही बात तुम्हारी दावात और कलम की बाबत में भी है। वे भी बेजान हैं, इस लिए देख, सुन, चल फिर नहीं सकतीं।'

'जी हाँ आपका कहना बिल्कुल सही है। दावात, कलम, रबड़ का ललुआ, मरा हुआ बिल्ली का बच्चा आदि सब बेजान हैं, इस लिए देखना, सुनना आदि काम नहीं कर सकते।'

'बेटी, अब तुम अपने आप ही समझ गई हो। देखो, जिनमे जान है, जो जानदार है, वे जीव कहलाते हैं। इसके विपरीत जिनमे जान नहीं है, जो जानदार नहीं हैं वे अजीव कहलाते हैं। जीव ही अपनी इच्छा से चल फिर सकता है, खा पी सकता है, देख सकता है, सुन सकता है, रोना, हँसना, गर्मी, सर्दी जानना आदि जीव ही कर सकता है, अजीव नहीं कर सकता। जिसे सुख दुख का ज्ञान है, जो अपने भले बुरे को जानता है, वह जीव है, बाकी सब अजीव हैं। इसी लिए तुम्हारी माता जी कहती हैं कि किसी जीव को मत सताओ, क्यों कि उसको दुख पहुँचेगा।'

'आज आपने मुझ पर बड़ी दया की। जीव और अजीव का भेद, अब मैं अच्छी तरह समझ गई हूँ।'

'बेटी सरला, मुझे बड़ी खुशी है, कि तुम जीव और अजीव के इस कठिन विषय को इतनी जल्दी समझ गई हो। अब याद रखना। देखना, कहीं भूल न जाना। क्या ?
(१) जिन में जान हो, जानने और समझने की ताकत हो, जिन्हें सुख दुःख का अनुभव होता हो, उन्हें जीव कहते

हैं। जैसे आदमी, घोड़ा, गाय, बिल्ली कबूतर, आदि।
(२) जिनमें न ज्ञान हो, न जानने और समझने की ताकत हो, जिन्हें सुख दुःख का अनुभव न होता हो, उन्हें अजीव कहते हैं। जैसे—दावात, कलम, मेज, कुर्सी, आदि।'

[वृक्ष, जल, अग्नि, वायु, मिट्टी में जीव हैं यह आगे चलकर वर्णन किया जायगा]

अभ्यास

१ जीव किसे कहते ?
२. अजीव किसे कहते हैं ?
३ गधा, घोड़ा कबूतर जीव हैं या अजीव ?
४, कुर्सी, मेज, स्लेट ज व हैं या अजीव ?
५ नीचे लिखे पदा र्थों से जीव और अजीव को अलग अलग बताओ —

कुत्ता, हिरन, ईंट, [illegible], चौकी, पुस्तक, मनुष्य, तोता, घड़ी, गाय, मोटर, [illegible] मुर्गी, कलम, दावात, बिल्ली, हाथी आदि।

प्रभात गायन

१

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहा जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।

२

टुक नींद से अखियाँ खोल जरा,
अरु अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीति करन की रीति नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है।

३

जो कल करना वह आज करो,
जो आज करना वह अब करलो।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया,
तब पछताये क्या होवत है॥

महारानी सीता

बहुत पुराने समय की बात है, हमारे यहाँ भारतवर्ष में एक बड़े राजा थे। उनका नाम जनक था वे मिथिला के राजा थे। उनके एक बड़ी सुन्दर सुशील लड़की थी। उसका नाम सीता था।

सीता जी का विवाह करने के लिए राजा जनक ने बहुत से राजकुमारों को बुलाया। उन्होंने कहा कि जो युवक हमारे इस विशाल काय भारी धनुष को उठा कर तान देगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

सब राजकुमारों ने कोशिश की, मगर धनुष किसी से उठा तक नहीं, अन्त में अयोध्या के राजकुमार श्री रामचन्द्र जी ने धनुष को झटपट उठा लिया और तान दिया। सीता जी का विवाह रामचन्द्र जी के साथ हो गया।

कुछ दिनों के बाद श्री रामचन्द्र जी को अपनी सौतेली माता कैकयी की आज्ञा से अपने छोटे भाई लक्ष्मन के साथ बन में जाना पड़ा। सीता जी भी उनके साथ हो गईं। जंगल में बहुत अधिक कष्ट थे, परन्तु श्री रामचन्द्र जी के साथ बहुत खुशी थी।

एक दिन लंका का राजा रावण, श्री रामचन्द्र जी की गैरमौजूदगी में—अकेले में सीता जी को चुरा ले गया। सीता जी बहुत रोईं, पर वहां कोई छुड़ाने वाला नहीं था। रावण ने सीता जी को लंका में छिपा दिया।

रामचन्द्र जी ने वानरवंशी वीरों की मदद से सीता जी का पता लगा लिया। हनुमान जी लंका में गए और सीता जी का खबर ले आए। फिर वानरवंशी युवकों की बड़ी भारी फौज लेकर वे लंका में पहुँचे और रावण से लड़े।

बड़ी भयंकर लड़ाई हुई। अन्त में रावण मारा गया, सीता जी रामचन्द्र जी से फिर मिलीं।

अब रामचन्द्र जी का वन में रहने का समय पूरा हो गया था। इस लिए वे सब के साथ अयोध्या को लौट गए।

अयोध्या पहुचने पर लोगो ने रामचन्द्र जी को अपना राजा और सीता जी को अपनी महारानी बनाया।

इसी तरह बहुत दिनो तक सीता जी रामचन्द्र जी के साथ सुख से रहीं और उनकी सेवा करती रही।

सीताजी अपने धर्म मे इतनी मजबूत थीं कि उन्होंने राजा रावण की रानी बनना मंजूर नहीं किया अपने पति के साथ बनो मे कैसे कैसे भयंकर कष्ट सहन किए।

यही कारण है कि लोग आज भी बडे आदर से उनका नाम लेते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं। आप सब भी बहुत भली लडकियाँ हैं इस लिए तुम्हें भी सीता जी के कदमों पर चलना चाहिए।

जैन धर्म में सोलह सती माना जाती हैं। माता जी

की गिनती भी उन सोलह सतियों में है। प्रातःकाल हर एक स्त्री पुरुष को सोलह सतियों के नाम स्मरण करने चाहिए। इसके लिए यह श्लोक है—

ब्राह्मी चन्दन बालिका भगवती राजीमती द्रौपदी,
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा।
कुन्ती शीलावती नलस्य दयिता चूडा प्रभावत्यपि,
पद्मावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे कुर्वन्तु नो मंगलम्॥

अभ्यास

१ सीता जी के पिता कहाँ के राजा थे?
सीता जी का विवाह कैसे हुआ?
३ रामचन्द्र जी की मदद किन लोगों ने की?
४ हनुमान जी क्या बन्दर थे?
५ रा [illegible] यहाँ से सीता जी कैसे छूटीं?
सीता जी के जीवन से क्या शिक्षा है मिलती?

अच्छी सीख

अच्छी लडकियों को बहुत सी अच्छी बातें सीख लेनी चाहिएँ। बडी होकर तुम्हे भोजन बनाने की जरूरत होगी, इसलिये यह काम तुम्हे अपनी माता और बड़ी बहनो से छुटपन में ही सीख लेना चाहिए।

जब कभी तुम्हारी माता कपडे सीने बैठे तो तुम भी उनके पास बैठकर उनका सीना पिरोना ध्यान से देखो और उनकी मदद करो। इससे थोडे ही दिनों में तुम्हे भी सीना आ जायगा और तुम अच्छे अच्छे कपडे सी सकोगी।

अपने छोटे भाइयों और बहनो के साथ अच्छा बर्ताव करो। उनको कभी भी दुखी न रहने दो। उनको चिडाना और रुलाना ठीक नहीं है।

अपने से बडे माता, पिता भाइ बहन वगैरह का आदर करो। प्रात काल उठते ही माता पिता के चरणों मे प्रणाम करना चाहिए। भाइ और बहन आदि

से जयजिनेन्द्र करना चाहिए। सदा उनका कहना माना करो। इससे तुम्हें कभी कोई कष्ट न होगा और तुम सदा सुखी रहोगी।

अगर तुम्हारे यहाँ कभी कोई बीमार पड़ जाय तो तुम्हें उसकी सेवा करनी चाहिए। तुम्हें रोगी से घिनाना न चाहिये। उसको खाना, पीना, दवा वगैरह ठीक समय पर दो।

तुम्हें सबसे मीठा बोल बोलना चाहिये, इससे सब लोग तुम्हारा आदर करेंगे। अपने मुँह से कभी कोई गाली या बुरा शब्द न निकालो।

तुम्हें हमेशा अपने कपड़े साफ रखने चाहिये और बदन भी खूब साफ रखना चाहिये। इससे सब लोग तुम्हें प्यार करेंगे और तुम कभी बीमार न पड़ोगी।

अभ्यास

१ प्रातःकाल उठकर क्या करना चाहिए?
२ घर में कोई बीमार हो तो क्या करना चाहिए?
३ सब के साथ कैसे बोलना चाहिए?
४ कपड़े साफ रखने से क्या लाभ है?

सीखो

सागर से गहरापन सीखो,
लहरों से आगे बढ़ना।
सहन शक्ति पृथ्वी से सीखो
और शैल से दृढ़ रहना॥

अम्बर से विशालता सीखो,
सूरज से जग-मग करना।
मेघों से लो दानशीलता,
तारों से मिल जुल रहना॥

वृक्षों से उदारता सीखो,
छाया से सेवा करना।
फूलों से भोलापन सीखो,
और लताओं से झुकना।

कलियों से मुस्काना सीखो,
और वायु से अठखेली।
चिड़ियों से मृदु गाना सीखो,
कोयल से मीठी बोली॥

पाँच इन्द्रियाँ

'इन्द्र' जीव को कहते हैं। जिसके द्वारा इन्द्र की यानी जीव को ज्ञान होता है उसे इन्द्रिय कहते हैं। जीव आँख के द्वारा देखता है और कान के द्वारा सुनता है, इसलिये आँख और कान इन्द्रियाँ हैं। इस प्रकार कुल इन्द्रियाँ पाँच हैं—(१) स्पर्शन इन्द्रिय, (२) रसन इन्द्रिय, (३) घ्राण इन्द्रिय, (४) चक्षु इन्द्रिय, और (५) कर्ण इन्द्रिय। कर्ण इन्द्रिय को श्रोत्र इन्द्रिय भी कहते हैं।

यह इन्द्रियों का पाठ बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिये। अगर तुम इसको अच्छी तरह समझ गई, तो आगे की कठिनाइयाँ बहुत सहल हो जायेंगी। इन्द्रियों की अच्छी तरह पहचान कराने के लिये प्रश्न और उत्तर के रूप में आगे वर्णन किया जाने वाला है। तुम प्रश्न और उत्तर पर बराबर ख्याल रखना। देखना, कहीं भूल न जाना।

(१) स्पर्शन इन्द्रिय

'क्या तुमने कभी बर्फ खाई है?'

'जी हाँ, कितनी ही बार।'
'कैसी होती है? गर्म होती है न?'
'जी नहीं, ठण्डी होती है।'
'अच्छा, आग कैसी होती है।'
'आग गर्म होती है।'
'लोहा और रुई कैसी है?'
'लोहा भारी और रुई हल्की होती है?'
'कभी ईंट और शीशे पर हाथ फेरा है, कैसे होते हैं?'
'ईंट खुरदरी और शीशा चिकना होता है।'
'क्या तुम कभी गदेले पर सोए हो?'
'जी हाँ कितनी ही बार। गदेला बड़ा नरम होता है।'
'अच्छा, यह बताओ-पत्थर कैसा होता है?'
'जी पत्थर तो बहुत कड़ा होता है।'

'तुम बहुत समझदार हो। अच्छा, एक बात और बताओ। बर्फ को ठंडा, आग को गर्म, लोहे को भारी, रुई को हल्की, ईंट को खुरदरी, शीशे को चिकना, गदेले को नर्म और पत्थर को कड़ा तुमने कैसे जाना? किस चीज से जाना?'

'हाथ पाँव और शरीर से छूकर।'

'बहुत ठीक। आज मैं याद रखूंगा, जिसके
किसी चीज को छूकर ठंडा, गर्म हलका, भारी
जाना जाता है उसे स्पर्शन इंद्रिय कहते हैं। स्पर्श
अर्थ शरीर है।'

(२) रसन इंद्रिय

'क्या तुमने कभी पेड़ा खाया है?'
'जी हाँ, कितनी ही बार।'
'बता सकती हो, क्या स्वाद होता है?'
'बहुत मीठा।'
'अच्छा, नीबू कैसा होता है?'
'नीबू खट्टा होता है।'
'नीम और मिर्च का स्वाद बताओ?
'नीम कड़ुआ और मिर्च चरपरी होती है।
'और आँवला?

आँवला खाया तो है, स्वाद का भी पता है
उसका नाम का पता नहीं। आँवला ...

न कड़ुआ और न चरपरा ही होता है। उसका स्वाद कुछ और ही तरह का है।'

'तुम ठीक कहती हो। आँवले का स्वाद कुछ अलग ही तरह का होता है। उसका नाम शास्त्रों में कषाय है। आजकल कषाय को कसैला कहते हैं।'

'अच्छा, अब यह बताओ, तुमने पेड़ा, नीम, मिर्च और आँवले का स्वाद कैसे जाना? किस चीज से जाना?'

'जीभ से चख कर जाना।'

'बस, याद रक्खो कि, जिसके द्वारा किसी चीज को चख कर उसका खट्टा मीठा आदि स्वाद जाना जाय, उसे रसन इन्द्रिय कहते हैं। रसन का अर्थ जीभ है।'

(३) घ्राण इन्द्रिय

'क्या कभी तुमने गुलाब या चमेली आदि का कोई फूल देखा और सूंघा है? यदि सूंघा है तो बता सकती हो, कैसा होता है?'

'क्या नहीं बता सकती? गुलाब और चमेली का

फूल खुशबूदार होता है। उसमें से बहुत भीनी भीनी सुगन्ध आती है।'

"और कभी तुमने मिट्टी का तेल भी देखा है?"

'अजी, मिट्टी के तेल में तो बहुत बदबू आती है।'

'अच्छा, बताओ—तुमने गुलाब की खुशबू और मिट्टी के तेल की बदबू को कैसे जाना? किस चीज से जाना?

'नाक से सूंघ कर जाना।

'ठीक कहा। आज से याद रखना कि जिसके द्वारा किसी चीज को सूंघ कर उसकी खुशबू या बदबू को जाना जाय, उसे घ्राण इन्द्रिय कहते हैं। घ्राण का अर्थ नाक है।'

(४) चक्षु इन्द्रिय

'कोयला या काजल का रंग कैसा होता है?'
'कोयला और काजल का रंग काला होता है।'
'सोना और चांदी का रंग कैसा होता है?'
'सोना पीला और चांदी सफेद होती है।'

'सून का रंग कैसा होता है ?'
'खून का रंग लाल होता है।'
'और कबूतर की गर्दन का रंग ?'
'कबूतर की गर्दन का रंग नीला होता है।'
'कच्चे आम का रंग बता सकती हो ?'
'जी हाँ, कच्चे आम का रंग हरा होता है।'

'अच्छा बताओ, तुमने यह कैसे किस चीज से जाना कि काजल काला, सोना पीला, चाँदी सफेद, खून लाल, कबूतर की गर्दन नीली और कच्चा आम हरा होता है।

'आँख से देख कर जाना।'

'अच्छा बेटी! याद रक्खो कि जिसके द्वारा किसी चीज को देखकर उसके रूप को यानी रंग को जाना जाय, उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं। चक्षु का अर्थ आँख है।'

(५) कर्ण इन्द्रिय

'घोड़ा कैसे बोलता है ?'
'घोड़ा हिनहिनाता है।'

'गधा कैसे बोलता है ?

'गधा रेंकता है।'

'कुत्ता कैसे बोलता है ?'

'कुत्ता भौंकता है।'

'अच्छा यह बताओ, घोड़े का हिनहिनाना, गधे का रेंकना, कुत्ते का भौंकना कैसे जाना ? किस चीज से जाना ?

"कान से सुन कर जाना।"

बस, आज से याद रखना कि जिसके द्वारा आवाज सुनाइ दे, किसी भी तरह का शब्द सुनाइ दे, उसे कर्ण इन्द्रिय कहते हैं। कर्ण का अर्थ कान है। कान को श्रोत्र भी कहते हैं। इसलिये कान को श्रोत्र इन्द्रिय भी कहा जाता है।'

अभ्यास

१ 'इन्द्र' किसे कहते हैं?
२ इन्द्रिय किसे कहते हैं?
इन्द्रियाँ कितनी हैं? उनके नाम बताओ।
४ स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं?
५ रसना इन्द्रिय से क्या जाना जाता है?
६ घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं?
७ आकार किस इन्द्रिय से जानी जाती है?
८ श्रोत्र किसे कहते हैं? इससे क्या जाना जाता है?
९ रसना इन्द्रिय का दूसरा नाम क्या है?
१० बहरे की कितनी इन्द्रियाँ हैं।
११ क्या अन्धा चार इन्द्रियों वाला है?

नोट—अन्धा, बहरा, गूंगा आदमी भी पंचेन्द्रिय ही माना जाता है। इन्द्रियाँ तो हैं, पर उनकी शक्ति नष्ट हो गई है।

हमारा भारत

यह भारत वर्ष हमारा है,
हमको प्राणों से प्यारा है।
है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ,
सन्तरी सरीखा अड़ा हुआ।
गंगा की निर्मल धारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है॥
क्या ही पहाड़ियाँ हैं न्यारी,
जिनमें सुन्दर झरना जारी।
शोभा में सब से न्यारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है॥
है हवा मनोहर डोल रही,
वन में कोयल है बोल रही।
बहती सुगन्ध की धारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है॥
तन मन धन प्राण चढ़ाएँगी,
हम इसका मान बढ़ाएँगी।
जग का सौभाग्य सितारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है॥

बड़ों का आदर

माता, पिता, चाचा, चाची, ताऊ, और ताइ आदि सब तुम से बड़े है, उनका आदर और सत्कार करना तुम्हारा कर्तव्य है। जो लडकियाँ अपने बडो का आदर करती है, वे ससार मे सब ओर से प्रशसा पाती ह और खुद बडी होने पर आदर की दृष्टि से देखी जाती ह।

जब कभी तुम से कोइ बडा आकर मिले, तो झटपट खडी हो जाओ, हाथ जोड कर प्रणाम करो, और आदर के साथ 'जय जिनेन्द्र' कहो। उनको बैठने के लिए आसन दो पीने के लिए जल आदि की पूछो।

वे जब कोइ बात पूछें, बडे ध्यान से सुन कर नम्रता पूर्वक उत्तर दो। उत्तर साफ हो, सच्चा हो। बडो मे कपट रखना, ठीक नही होता।

बडों के सामने मुँह करके छींकना ठीक नहीं होता। छींक आए तो दूसरी ओर मुँह करके छींको। छींकते समय मुँह पर रूमाल या हाथ लगा लेना चाहिए।

जब बडे खडे होकर जाने लगे तो उनके खडे होते ही तुम भी खडी हो जाओ, कुछ दूर पहुचाने के लिए साथ

जाओ, और फिर जयजिनेन्द्र करने के साथ प्रणाम करके लौटो।

बड़े लोगों से प्रश्न करते समय मत हँसो। और प्रश्न करने में अपना अहंकार भी न दिखलाओ। जो कुछ पूछना हो, विनय के साथ पूछो। बड़े जब उत्तर दें, तो समझने के लिए ही इधर उधर का दलीलें मत करो। व्यर्थ विवाद चढ़ा कर अपनी हेकड़ी दिखाना, ठीक नहीं है। यदि बड़ों के उत्तर में कुछ भूल हो, तो हँसो मत। बड़ों के सामने हँसना, उन की भूल का मजाक करना, बड़ी खराब आदत है। भगवान महावीर इसे बहुत बड़ा पाप बतलाते हैं। उनका कहना है कि विनयहीन आदमी किसी भी धर्म का पालन नहीं कर सकता।

अस्तु, बड़ों की पीठे कभी बुराई मत करो। अपने माता, पिता, भाभी, भाई आदि की दूसरों के सामने निन्दा करना बड़ा भयंकर पाप है। बड़ों की निन्दा करने से उनकी निन्दा नहीं होती, वरन तुम्हारी ही निन्दा होती है। जब तुम दूसरों के सामने अपने घर की निन्दा करोगे और

कभी वह सुन पाएँ, तो उनको कितना दुःख होगा। हमेशा सभ्य बनने की कोशिश करो।

पाठशाला में जितनी अध्यापिकाएँ हों, चाहे वे तुम से नीचे दर्जे को पढ़ाती हों, चाहे ऊँचे दर्जे को, जब वे तुम से मिलें तो सब से हाथ जोड़कर जयजिनेन्द्र, करो। और जब वे विदा हों, या तुम उनके पास से जाना चाहो, तब भी जयजिनेन्द्र करो। इसी प्रकार जो कन्याएँ तुमसे बड़ी हों, ऊँचे दर्जे में पढ़ती हों तो उनको भी जयजिनेन्द्र कहकर आदर देना चाहिए।

अभ्यास

१—बड़ों के आने पर क्या करना चाहिए?
२—बड़ों से कैसे बोलो?
३—बड़ों के आगे कैसे आओ?
४—बड़ों को विदा कैसे दो?
५—अध्यापिकाओं से कैसे बरतो?

दया

जानवर हैं आदमी,
जो बुद्धि में बढकर न हो।
बुद्धि भी क्या बुद्धि है,
जो धर्म में तत्पर न हो॥
धर्म भी क्या धर्म है,
जिसमें नहीं है सत्य कुछ।
सत्य वह किस काम का,
उपकार जो तिल भर न हो॥
कर सके उपकार केवल,
है वही बस आदमी।
यों तो कहने के लिए हो,
आदमी, बन्दर न हो॥
बुद्धि में, बल में, विभव में
लाख बढ कर हो मनुष्य।
जानवर समझो, दया का
जो असर दिल पर न हो॥



राजा मेघरथ

बहुत पुराने जमाने की बात है मेघरथ नाम के
क बड़े ही दयालु राजा थे। किसी भी दुखी को देख
र उनका कोमल हृदय दया से भर जाता था। वे
खी की सेवा करने में किसी प्रकार की कमी नहीं
रते थे। यहां तक कि सेवा और दया के मार्ग में
अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार हो जाते थे।

अच्छे लोगों का यश इस लोक में ही नहीं रहता,
कि दूसरे लोकों में भी जा पहुँचता है। राजा का यश
भी स्वर्ग लोक तक पहुँच गया। एक समय की बात
है कि स्वर्ग के राजा इन्द्र ने अपनी देव-सभा में मेघरथ के
दया भाव की बड़ी भारी प्रशंसा की। सब देवताओं ने
सुनकर प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु दो देवता कुछ नाराज
हुए, उन्होंने परीक्षा की ठानी।

एक कबूतर बना, दूसरा बहेलिया। कबूतर उड़ता
हुआ राजा के पास पहुँचा। वह भय के मारे थर-थर
काप रहा था। राजा ने बड़े प्रेमपूर्ण दया भाव से

कबूतर की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा भाई, डरता क्या है? आनन्द में रहो। अब तुझे कोई मार नहीं सकेगा।

इतने में पीछे पीछे बहेलिया भी आ पहुंचा। वह बोला महाराज यह मेरा कबूतर है। मैंने खाने के लिए इसे पकड़ा था। मैं जो यह मेरा भाज भी भूखा है। मेरा कबूतर मुझे मिलना चाहिए।'

राजा ने कहा भाई अब तो यह मेरी शरण में आ गया है। मैं तुम्हें मारने के लिए, भला कैसे दे सकता हूं? हां, इसके बदले में, जो कहो दिला दूं। बताओ, क्या चाहिए?'

बहेलिया ने कहा—'महाराज, यह अन्याय है। मेरी चीज मुझे लौटा दीजिये। अगर नहीं लौटा सकते, तो किसी अन्य जीवित प्राणी का कबूतर जितना मांस दिला दें। मुझे ताजा मांस चाहिए बासी नहीं।'

राजा ने कहा—'यह कैसे हो सकता है। कि कबूतर को बचाऊं और दूसरे किसी पचेन्द्रिय जीव को मारूं?

और जो चाहो, ले लो, मास नहा दे सकता । जानते हो किसी जीव को मारना और मास खाना, कितना बुरा है ? अगर मास ही लेना है, तो मैं अपनी देह का मास दे सकता हूँ ।'

बहेलिये ने कहा--'महाराज, यह क्या करते हो ? एक कबूतर के लिए अपना मास देना चहाते हो ? जरा विचार कर काम कीजिए ।'

राजा को मन्त्रियों ने और प्रजा के लोगा ने भी बहुत समझाया। परन्तु वह दयावीर कब मानने वाला था ? बहेलिया मास की रट लगाए रहा, और राजा ने किसी दूसरे जीव का मास न देना चाहा । कबूतर की रक्षा के लिए राजा अपने प्राणा पर खेलने लगा ।

राजा ने झटपट तराजू मगा ली । तराजू के एक पलडे मे कबूतर को बिठाया और दूसरे पलडे मे अपना मास काट काट कर रखने लगा । पलडा मास से भर गया परन्तु कबूतर के बराबर न हुआ । देवता की माया जो ठहरी । राजा मेनप्थ भी पीछे हटने वाले वीर नहीं

बडे आनन्द के साथ हँसते हुए तराजू के पलड़े में बैठ गए, और कहा--'लो भई, अब तो कबूतर के बराबर हुआ।'

राजा का तराजू में बैठना था कि आकाश में देव दुन्दुभि बज उठी। फूलों की वर्षा होने लगी। जय जय की ध्वनि से वायु मण्डल दूर-दूर तक गूंजता चला गया। दोनों देवताओं ने प्रसन्न भाव से राजा के चरणों में झुक कर वन्दना की और क्षमा माँगी। राजा का शरीर क्षण भर में फिर पहले सा स्वस्थ हो गया।

पुत्रियो, जैन इतिहास में राजा मेघरथ का बहुत गुण गान किया गया है। क्या धर्म के लिए राजा मेघरथ का उदाहरण अलौकिक है।' तुम जानती हो, भगवान शान्तिनाथ कौनसे तीर्थंकर थे? राजा मेघरथ का दयालु आत्मा ही आगे चलकर जैन धर्म के १६ सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी के रूप में अवतारित हुआ।

भगवान शान्तिनाथ जी भी दया के जीते जागते अवतार थे। आपके जन्म के प्रभाव से ही देश में फैल

रेश्या भगा का रोग दूर हो गया, और चारों तरफ सुख शांति का साम्राज्य छा गया। दया का फल कितना सुंदर है? दया के प्रभाव से तीर्थंकर जैसा महान पद मिलता है, जिनके चरणों में स्वर्ग के इन्द्र भी मस्तक झुकाते हैं।

अभ्यास

१—राजा मेघरथ कैसा राजा था?
२—उसके पास दो देवता क्यों आये?
३—राजा और पहेलिया में क्या बातें हुई?
४—मेघरथ कौन से तीर्थंकर हुए?
५—इससे तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

गुरु वन्दन मंत्र

तिक्खुत्तो आयाहिण,
पयाहिण करेमि ।
वन्दामि, नमंसामि,
सक्कारेमि, सम्माणेमि ।
कल्लाण मंगल,
देवय, चेइय ।
पज्जुवासामि,
मत्थएण वंदामि ।

यह पाठ गुरुदेव को वन्दना करने के समय बोला जाता है । जैन साधु और जैन साध्वी, जैन धर्म मे गुरु माने गए हैं । जैन धर्म म रुपाला कंठी बाँध कर भेंट पूजा चढ़वाने वाले को गुरु नहीं मानते ।

जैन धर्म म गुरु वही माना जाता है जो किसी प्रकार का लोभ लालच न करे, रुपया पैसा धन कुछ भी न रक्खे, ताँगा मोटर रेल आदि किसी भी सवारी पर न बैठे,

जहाँ जाना हो नंगे पैरों चले, कच्चा पानी पीए, आग का स्पर्श न करे, किसी भी नशीली भंग आदि चीज का सेवन न करे, हरी साग सब्जी न खाए, न कभी झूठ बोले न कभी चोरी करे, साधु किसी औरत को न छूवे, साध्वी किसी मर्द को न छूवे, न रात में भोजन करें और न रात में पानी पीवें। तुम दस बच्चे हो, कितना कड़ा त्याग है ? जैन साधु बन जाना, कुछ आसान खेल नहीं है।

संसार में सच्चे गुरु का दर्जा बहुत ऊँचा माना गया है। संसार की झंझट में फंसे हुए अज्ञानी जीवों को धर्म का सच्चा उपदेश, गुरु से ही मिलता है। गुरुदेव हमारे मन में से अज्ञान का अन्धकार दूर कर [illegible] ज्ञान का प्रकाश कर देते हैं। ऐसे गुरुदेव के [illegible] वन्दना करना, नमस्कार करना, तुम्हारा [illegible] फर्ज है। गुरुदेव को सच्चे प्रेम के साथ [illegible] आत्मा को बहुत बड़ी शान्ति प्राप्त होती है।

जैन स्थानक में जब गुरुदेव के [illegible] के लिए जाओ तो कुछ दूर पर [illegible]

जोड कर यह तिक्खुतो का पाठ पढो और जब आखिरी टुकडा 'मत्थएण वन्दामि' आवे, तब जमीन पर घुटने टेक कर सिर झुका कर नमस्कार करो। यह तिक्खुत्तो का पाठ तीन बार पढा जाता है, और तीनो ही बार घुटने टेक कर नमस्कार किया जाता है।

अगर कहीं घुटने टेक कर वन्दना करने की हालत म न हो, तो खडे खडे ही तीन बार तिक्खुतो का पाठ पढ कर, सिर झुका कर वन्दना करनी चाहिए।

अगर कभी गुरुदेव रास्ते म आहार पानी लाते हुए या विहार करते हुए मिले तो वहाँ 'मत्थएण वन्दामि' बस इतना कहकर ही वन्दना करना ठीक है।

वन्दना करते समय तुम साध्वी जी के चरणों को छू सकती हो, साधुओं के चरणो को नहीं। और मर्द, साधु जी के चरणो को छू सकते है, साध्वी जी के चरणो को नहीं

१—जैन धर्म म गुरु किस कहते है ?
२—वन्दना कैसे करनी चाहिए ?
३—वन्दना करते समय तिक्खुतो कितनी बार पढना ?
४—रास्ते में वन्दना कितने पाठ से करना ?
५—कौन किसके चरण छू सकता है ?

बोलो

जब बोलो तब सच-सच बोलो,
कभी न बातें रच रच बोलो
जब बोलो तब हँस कर बोलो।
बाना मे मिसरी सी घोलो।
जब बोलो तब झुक कर बोलो।
सोच समझ कर रुक कर बोलो,
जब बोलो तब खुल कर बोलो,
अपने मन की बातें खोलो।
जब बोलो तब हित कर बोलो,
मन मे आदर भर कर बोलो।
जब बोलो तब कम ही बोलो,
बिन अवसर मत मुंह को खोलो।
जब बोलो तब मीठा बोलो,
कभी न कुछ भी कड़ुआ बोलो।
कभी किसी का भेद न खोलो,
घर की बात न बाहर बोलो।
द्वेष, कपट रख कभी न बोलो,
निन्दा, चुगली का मल धो लो।

जैनधर्म दयाधर्म

हम कोई दुख दे, हम कोई मारे, हमें कोई गाली दे तो हम कैसा लगता है? बुरा लगता है या अच्छा लगता है? बुरा लगता है न?

अब विचार कीजिए। अगर हम किसी जीव को दुख दें, किसी जीव को मारें, सताएँ या गाली दें, तो उसे कैसा लगेगा? बुरा लगेगा या अच्छा लगेगा? बुरा लगेगा न?

हाँ तो जो बात हम पसन्द नहीं है, हमें खराब लगती है, वह दूसरे को किस तरह पसन्द आ सकती है! किसी तरह अच्छी लग सकती है!

भगवान महावीर ने इसीलिए तो कहा है—'कि जो बात तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते, वह दूसरों के लिए भी मत करो। संसार के सब जीव अपने लिए सुख चाहते हैं, दुख कोई भी नहीं चाहता। सब को अपने समान ही समझो।'

अच्छा तो भगवान महावीर के उपदेश का क्या सार निकला ? भगवान महावीर के उपदेश का यह सार है कि, हम न किसी को मारें, न सताएं न दुःख दें, न गाली दें, न किसी प्रकार का वैर भाव रक्खें। हम सब जीवों से प्रेम भाव रक्खें। जहाँ तक हम से बन सके, दूसरे जीवों को सुख शान्ति पहुँचाएँ। यही अहिंसा है, यही दया है। एक प्रकार से जैन धर्म का प्राण दया ही है। तभी तो जैन धर्म का दूसरा नाम दया धर्म है।

भगवान महावीर के शासन में दयाधर्म की बहुत बड़ी महिमा है। भगवान महावीर को भगवान का पद भी, उनकी अपार दया के कारण ही मिला था। भगवान महावीर ने खुद भयंकर कष्ट उठाकर संसार के सब जीवों को सुख शान्ति का मार्ग बतलाया। दूसरों के दुःख-को दूर करने के लिए अपने सुख को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाना, इसी का नाम सच्ची दया है।

दया, धर्म का मूल है। मूल, जड़ को कहते हैं।

अगर वृक्ष की जड सूख जाय तो वह फिर हराभरा नहीं रह सकता, उसी समय सूख जाता है। इसी प्रकार दया का नाश होते ही धर्म का वृक्ष भी हराभरा नहीं रह सकता, उसी समय सूख जाता है। जो साधक सच्चा दयालु होगा, उसमे दूसरे सद्‌गुण अपने आप आजायेंगे। दया के होने पर ही आदमी सच बोल सकता है, ईमानदार रह सकता है, अच्छा चाल चलन बन सकता है, सतोषी रह सकता है, और उदार दान देने वाला हो सकता है।

दया, सबसे बडा धर्म है। दया के बराबर दूसरा कोई भी धर्म नहीं है। जैन धर्म मे तो सब जीवो पर दया भाव रखना, एक मुख्य धर्म माना ही गया है, पर इसे दूसरे धर्म वाले भी मानते है परन्तु विचार और आचार मे जैनो की दया, सभी दुनिया मे श्रेष्ठ मानी गई है। इसलिए हम सब को अधिक से अधिक दयालु होना चाहिए। हम सब जीवो को प्रेम की आँखो से ही देखें किसी प्रकार का भी वैर विरोध और द्वेष न रक्खें।

१

'अमर' जगत में मनुज का,
जीवन है अनमोल ।
दया-भाव रखना सदा,
मन की घुंडी खोल ॥

२

'अमर' दयामय धर्म की,
रात दिवस जय बोल ।
बिना दया का धर्म भी,
धर्म नहीं, है पोल ॥

अभ्यास

१—हम कोई दुःख देता है तो कैसा लगता है ?
२—भगवान महावीर का क्या उपदेश है ?
३—धर्म का मूल क्या है ?
४—जैनधर्म का दूसरा नाम क्या है ?

सभ्यता

(१)

बड़ों को सदा आप कह कर बोलो, तुम या तू मत कहो। तू कहना तो बहुत ही भद्दा है। 'आप' बड़ों के लिए आदर भाव का सूचक है।

(२)

जब किसी से बोलना हो तो बड़े आदर के साथ पिताजी, चाचा जी, भाई जी, तथा अम्मा जी, ताई जी, बहन जी, आदि यथा योग्य विशेषण लगाकर बोलना चाहिए।

(३)

अपने से बड़ों के साथ चलना हो तो उनसे एक दो कदम पीछे रहो। वे पीछे हों तो मार्ग देकर उनको आगे हो जाने दो। दरवाजे के अंदर जाना हो तो पहले उनको जाने दो। दरवाजा बंद हो तो आगे बढ़कर उसे खोलदो।

(४)

अपने से बड़े या अतिथि–महमान के आने पर

उनका स्वागत खड़े होकर करना चाहिए। और जब वे जाने लगें तब भी खड़े हो जाना चाहिए। और हो सके तो दरवाजे तक या गाड़ी तक उनके साथ विदा करने के लिए जाना चाहिए।

(५)

लिखते समय उँगलियों में स्याही मत लगने दो। यदि भूल में लग जाय तो तुरन्त रगड़ कर साफ कर डालो। स्याही से भरे हुए काले और लाल हाथ ठीक नहीं होते।

(६)

कलम से जमीन पर स्याही न छिड़को। और न उसको सिर के बालों से पोंछो। जमीन पर स्याही डालने से फर्श गंदा होता है, और बालों से पोंछने पर सिर गंदा होता है।

(७)

हर जगह थूकने की आदत बुरी है। इससे बीमारी फैलती है। हर जगह नाक भी नहीं सिनकना चाहिए।

इसके लिए रूमाल रक्खो।

(८)

लिफाफा थूक लगा कर नहा बन्द करना चाहिए। और न पुस्तक के पन्ने थूक लगाकर उलटने चाहिए। कपड़े न पुस्तक के पन्ने थूक लगा कर कभी मत चबाओ।

(९)

किसी को कोई चीज देनी हो तो बायें हाथ से मत दो। और लेनी हो तो बायें हाथ से मत लो। देने लेने में दाहिने हाथ का व्यवहार करना ही ठीक है। बायें हाथ से लेना अनादर का सूचक है।

(१०)

सभ्य समाज में डकार लेना, जीभ निकालना, नाक में उँगली डालना, उँगली चटकाना, जम्हाई लेना, आपसमें कानाफूसी करना, अँगड़ाई लेना, जोर से हँसना, जोर से बोलना—इत्यादि बुरा समझा जाता है

(११)

न भी किसी अपने से बडे या छोटे से मिलो तो
। के साथ हाथ जोड कर जय जिनेन्द्र करो। और
वेदा हो तब भी जय जिनेन्द्र करके विदा होना
, या दूसरे को विदा देना चाहिए।

मगल पाठ

(१)

अरिहन्त जय जय,
सिद्ध प्रभु जय जय।
साधु जन जय जय,
जिन धर्म जय जय॥

(२)

अरिहन्त मगल,
सिद्ध प्रभु मगल।
साधु जन मंगल।
...न धर्म मगल॥

(३)

अरिहन्त उत्तम
सिद्ध प्रभु उत्तम
साधु जन उत्तम,
जिन धर्म उत्तम ॥

(४)

अरिहन्त शरण,
सिद्ध प्रभु शरण
साधु जन शरण,
जिन धर्म शरण ॥

(५)

चार शरण अघ हरण जगत में,
और न शरणा हितकारी
जो जन ग्रहण करे वे होते,
अजर अमर पद के धारी ॥

नोट—यह मंगल पाठ सुबह पालथी आसन से बैठ कर, पूर्व की ओर मुँह कर, दोनों हाथ जोड कर पढना चाहिए ।

रात्रि भोजन

मारवाड में एक आदमी था। वह रात में भोजन किया करता था। उसे मिलने वाले जैन लोगों ने बहुत समझाया कि "रात में मत खाया करो, खाने के लिए दिन के बारह घंटे क्या कुछ कम हैं? दिन को छोड़ कर रात में खाना, अंधों का खाना है।"

वह आदमी बड़ा जिद्दी था। नहीं माना। 'मैं जैन धर्म की बात क्यों मानूं!'—यह भी उसके मन में घमंड था, वह रात में ही रसोई बनवाता रहा और खाना रहा,

एक बार उसने अपने नौकर से रात में रसोई बनवाई। रसोई में पूरी समूची भिंडी की तरकारी छौंकी गई थी।

अचानक एक छिपकली ऊपर से या कहीं आसपास से आकर तरकारी में गिर गई। रात के अंधेरे में वह दिखाई नहीं दी। भिंडी के साथ ही वह भी पका दी गई।

वह आदमी जब भोजन करने बैठा तो पहले ही कौर में छिपकली आ गई। वह रसोई करनेवाले नौकर पर गुस्सा होकर बोला। "क्यों रे नालायक, इस भिंडी का डंठल

भी नहीं तोडा !" नौकर घबरा कर बोला "हुजूर, मैंने तो सभी भिंडियों के डंठल तोडे हैं, यह एक कैसे रह गई !"

अब तो भोजन करने वाले ने ज्यों ही उसे तोडने के लिए रोटी का टुकडा, उस पर रगडा तो चार पैर दिखाई दिए। वह चिल्ला उठा--"अरे यह क्या है !!"

अंधेरा था। अच्छी तरह साफ नहीं दिखाई दे रहा था। नौकर से झटपट लालटेन ले आने को कहा।

नौकर जल्दी में लालटेन ले आया। लालटेन के उजाले में देखा तो एक दम हक्का बक्का रह गया। उसके मुंह से अचानक चीख निकली--"अरे यह तो छिपकली है। बहुत बचा, नहीं तो आज मर गया होता।"

उस दिन से उसने रात में खाना छोड दिया। वह कहने लगा--"रात का खाना बहुत बुरा है। अब भूल करके भी कभी रात में नहीं खाऊंगा।"

रात का खाना बहुत खराब है। जैन धर्म में इसे

न बुरा बताया गया है। रात में उल्लू और चमगादड़
त हैं। हंस और तोता कभी भी रात को [illegible]
अच्छे और भले हैं, वे रात के [illegible]
। रात का [illegible] गया है। [illegible]
दि अनेक सूक्ष्म जंतु खाने में पड़ [illegible]
ता है।

आज के संसार में महात्मा गांधी [illegible]
हापुरुष हैं। इसलिए, वे भी रात में [illegible]
त्रि भोजन को गांधी जी बहुत बुरा [illegible] है। [illegible]
। यह नियम धर्म और स्वास्थ्य दोनों [illegible]
ानने योग्य है।

अभ्यास

१—यह घटना कहां और कैसे बना ?
२—जैनधर्म में रात्रि भोजन को कैसा [illegible] है ?
३—रात में कौन पक्षी खाते हैं ? कौन [illegible] ?
४—गांधी जी रात्रि-भोजन करते हैं या नहीं ?

नल दमयन्ती

आज कल की नहीं, हजारों वर्ष पहले की बात कि भारतवर्ष की अयोध्या नगरी में, नल नाम के एक बहुत बलवान, गुणी और विद्वान राजा थे। राजा नल अपनी प्रजा से बड़ा प्रेम करते थे, अतएव उनका यश दूर दूर तक फैला हुआ था।

विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती भी उस युग में बहुत सुन्दर और सुशील लड़की थी। उसकी प्रशंसा भी दूर दूर तक फैली हुई थी। राजा नल ने दमयन्ती के और दमयन्ती ने राजा नल के रूप और गुण की बहुत प्रशंसा सुनी। दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। सौभाग्य से जब दमयन्ती का स्वयंवर हुआ तो दमयन्ती ने अन्य सब राजाओं को छोड़ कर नल को ही वरमाला पहनाई। बड़े आनन्द के साथ दोनों का विवाह हो गया।

राजा नल में और तो सारे गुण बहुत अच्छे थे, परन्तु जुआ खेलने की बहुत बुरी टेव थी। राजा नल

चन्द्रमा थे, तो यह दुर्गुण उनमें कलक था। नल का छोटा भाइ कूबर बड़ा ही दभी और ईर्ष्यालु प्रकृति का जीव था। एक बार राजा नल ने कूबर के साथ जुआ खेला, राज पाट सब हार गए। आखिर शर्त के अनुसार नल को वनवास स्वीकार करना पडा।

दमयन्ती ने कहा कि मैं भी आपके साथ चलूगी। नल ने बहुत समझाया कि 'वन मे बड़े कष्ट हैं, इसलिए तुम अपने पिता के यहा चली जाओ।' परन्तु दमयन्ती ने कहा—'जब पति पर सकट आया हो, तब स्त्री को उसका साथ देना चाहिए। वह स्त्री ही क्या, जो सकट में पति का साथ छोड दे।' आखिर दोनों वन में जाकर रहने लगे।

एक दिन राजा नल दमयन्ती को सोती छोड कर कहीं चल दिए। उन्होंने सोचा कि 'जब वह मुझे न पावेगी तो अपने आप पिता के यहा चली जायगी व्यर्थ ही मेरे कारण वन मे दुःख पा रही है।

राजा नल के चले जाने पर दमयन्ती की नींद खुली

वह जंगल में अकेली नल को खोजती फिरी और तरह तरह के कष्ट उठाती रही। वह बड़ी साहस वाली स्त्री थी। वन में भयकर सिंह, सर्प आदि से भी नहीं डरती थी। आखिर जब भीम को मालूम हुआ तो उसने दमयन्ती को बड़े प्रेम से अपने पास बुला लिया।

उधर राजा नल दधिपर्ण राजा के यहा गुप्तरूप से सारथी बन कर रहने लगा। उस युग में नल के समान दूसरा कोई घोड़ों को तेज चलाने में निपुण नहीं था। नल को प्रगट करने के लिए दमयती का फिर से जाली स्वयंवर रचा गया। समय जान बूझ कर इतना थोड़ा रक्खा गया कि नल के समान चतुर सारथी ही वहा इतनी जल्दी पहुँच सकता था। आखिर राजा नल दमयन्ती के लिए प्रगट होगए। अयोध्या में आकर राज्य करने लगे। उत्तर अवस्था में नल और दमयन्ती ने जैन धर्म की मुनि दीक्षा ग्रहण की। धर्म साधना के बाद सद्गति प्राप्त की। जैन धर्म की १६ सतियों में दमयन्ती का भी प्रमुख स्थान है।

अभ्यास

१—दमयन्ती की कहानी बताओ !

—नल में क्या दूषण था ? ३—जाली